## दिनांक 9 जुलाई, 1986

सं ब्रो.वि./हिसार/9-86/23557.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं मैं मैं निजा डायरैक्टर स्टैट कोपरेटिव सप्लाई एण्ड मार्किटिंग फैंडरेशन लि॰ चंडीगढ़ (2) हैफ़ड जिनिंग एण्ड काटन सींड प्रोसेसिंग कम्पलैक्स रितया जिला हिसार के श्रमिक श्री किताब सिंह, पुत्र श्री रागी राम मार्फत श्री धर्मपाल दीवान की कोठी चौक मोहल्ला, महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिधिसूचना की द्वारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे संबन्धित नीचे लिखा मामला म्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त अबन्धकों तथा श्रमिक के दीच या तो विवादग्रस्त मामला है था विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री किताव सिंह, पुत्र श्री रागी राम, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० स्रो०वि०/गुड़गांव/63-86/23565--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० (1) म्रार.बी.म्रार. इंन्जोि नियरिंग कम्पनी प्रा० लि० गुड़गांव, के श्रमिक श्री राम सकल, पुत्न श्री पोलेश्वर सिंह मार्फत भारतीय मजदूर संघ, मुनीम मार्किट गुड़गांवा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना शंछनीय समझते हैं;

इसलिए, मन, भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई किस्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुये प्रधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दियांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के प्रधीन गठित अस न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्देश्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रयन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम सकल पुत्र श्री पोलेश्वर सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं को विव /एफ.डी./गुड़गांवा/59-86/23571 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विद्युत इन्जीनियरिंग एण्ड टैकनोलोजी प्रा. लि. गुड़गांवा के श्रमिक श्री राम किशन, पुत्र श्री दान सिंह माफंत भारतीय मजदूर संघ, मुनीम मार्किट, गुड़मांवा, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्यों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयचा संबंधित मामला है:—

क्या श्री राम किशन, पुत्न श्री दान सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस 🕏 राहत का हकदार है ?

जे० पी० रतन, उप-सर्चिन, हरियाणा सरकार, ⁵ श्रम विभाग ।